कुछ राय ठहरी थी वह भी कहा जिसे बीरेन्द्रसिंह ने बहुत पसन्द किया।

स्नान पूजा और मामूली कामों से फुरसत पा दोनों आदमी देवीसिंह को साथ लिए राजदर्बार में गये। देवीसिंह ने छुट्टी के लिये अर्ज किया। राजा देवीसिंह को बहुत चाहते थे, छुट्टी देना मंजूर न था, कहने लगे—"यहाँ ही हम तुम्हारी दवा करावेंगे।" आखिर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह की सिफारिश से छुट्टी मिली। दर्बार बर्खास्त होने पर बीरेन्द्रसिंह राजा के साथ महल में चले गये और तेजसिंह अपने पिता जीतसिंह के साथ घर आये, देवीसिंह को भी साथ लाये और सफर की तैयारी करा उसी समय उनको रवाना कर दिया, जाती दफे और भी कई बातें समझा दीं।

दूसरे दिन तेजसिंह अपने साथ बीरेन्द्रसिंह को उस घाटी में ले गये जहाँ अहमद को कैद किया था। कुमार उस जगह को देख कर बहुत ही खुश हुए और बोले, "भाई इस जगह को देख कर तो मेरे दिल में बहुत सी बातें पैदा होती हैं।" तेजसिंह ने कहा, "पहिले पहिल इस जगह को देख कर मैं तो आपसे भी ज्यादा हैरान हुआ था मगर गुरूजी ने बहुत कुछ हाल यहाँ का समझा कर मेरी दिलजमई कर दी जो किसी दूसरे वक्त आपसे कहूँगा।"

बीरेन्द्रसिंह इस बात को सुन कर और भी हैरान हुए और उस घाटी की कैफियत जानने के लिए जिद्द करने लगे। आखिर तेजसिंह ने वहाँ का हाल जो कुछ अपने गुरू से सुना था कहा जिसे सुन बीरेन्द्रसिंह बहुत प्रसन्न हुए। तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह से क्या कहा, वे इतने खुश क्यों हुए, और वह घाटी कैसी थी यह सब हाल किसी दूसरे मौके पर बयान किया जायगा।

वे दोनों यहाँ से रवाना हो अपने मकान पर आए। कुमार ने कहा, "भाई अब तो मेरा हौसला बहुत बढ़ गया और जी में आता है कि जयसिंह से लड़ जाऊं।" तेजसिंह ने कहा, "आपका हौसला ठीक है मगर जल्दी करने से चन्द्रकान्ता की जान का खौफ है। आप इतना घबड़ाते क्यों हैं, देखिए तो क्या होता है, कल मैं फिर जाऊंगा और मालूम करूंगा कि अहमद के पकड़ जाने से दुश्मनों की क्या कैफियत हुई, फिर दूसरी दफे आपको ले चलूंगा।" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "नहीं अबकी मैं जरूर चलूंगा, इस तरह एक दम से डरपोक होकर बैठे रहना मर्दों का काम नहीं।"

तेजसिंह ने कहा, "अच्छा आप भी चलिये, हर्ज क्या है, मगर एक काम होना जरूरी है जो यह कि महाराज से पाँच चार रोज के लिए शिकार की छुट्टी लीजिये और अपनी सरहद पर खेमा डेरा डाल दीजिये, वहां से कुल ढाई कोस चन्द्रकान्ता का महल रह जायगा, तब बहुत तरह का सुभीता होगा।" इस बात को बीरेन्द्रसिंह

ने भी पसन्द किया और आखिर यही राय पक्की ठहरी।

कुछ दिन बाद बीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता राजा सुरेन्द्रसिंह से शिकार के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली और थोड़े से अपने दिली आदमियों को जो खास उन्हीं के खिदमती थे और उनको जान से ज्यादा चाहते थे, साथ ले रवाना हुए। थोड़ा सा दिन बाकी था जब नौगढ़ और विजयगढ़ के सिवाने पर इन लोगों का डेरा पड़ गया। रात भर वहां मुकाम रहा और यह राय ठहरी कि पहिले तेजसिंह विजयगढ़ जाकर हाल चाल ले आवें।

सातवां बयान

अहमद के पकड़े जाने से नाजिम बहुत उदास हो गया और क्रूरसिंह को तो अपनी ही फिक्र पड़ गई कि कहीं तेजसिंह मुझको भी न पकड़ ले जाय। इस खौफ से वह हरदम चौकन्ना रहता था, मगर महाराज जयसिंह के दरबार में रोज जाता और बीरेन्द्रसिंह की तरफ से उनको भड़काया करता।

एक दिन नाजिम ने क्रूरसिंह को यह सलाह दी कि जिस तरह हो सके अपने बाप कुपथसिंह को मार डालो, उसके मरने के बाद जयसिंह जरूर तुमको मन्त्री (वजीर) बनायेंगे, उस वक्त तुम्हारी हुकूमत हो जाने से सब काम बहुत जल्द होगा। आखिर क्रूरसिंह ने जहर दिलवा कर अपने बाप को मरवा डाला। महाराज ने कुपथसिंह के मरने पर अफसोस किया और कई दिन दर्बार में न आये, शहर में भी कुपथसिंह मन्त्री के मरने का गम छा गया।

क्रूरसिंह ने जाहिर में अपने बाप के मरने का बड़ा भारी मातम (गम) किया और बारह रोज के वास्ते अलग बिस्तरा जमाया। दिन भर तो अपने बाप को रोता पर रात को नाजिम के साथ बैठ कर चन्द्रकान्ता के मिलने तथा तेजसिंह और बीरेन्द्रसिंह को गिरफ्तार करने की फिक्र करता। इन्हीं दिनों बीरेन्द्रसिंह ने भी शिकार के बहाने विजयगढ़ की सरहद पर खेमा डाल दिया था, जिसकी खबर नाजिम ने क्रूरसिंह को पहुँचाई और कहा— 'बीरेन्द्रसिंह जरूर चन्द्रकान्ता की फिक्र में आया है। अफसोस इस समय अहमद न हुआ नहीं तो बड़ा काम निकलता, खैर देखा जायगा।" यह कह क्रूरसिंह से बिदा हो बालादवी* के वास्ते चला गया।

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत हो विजयगढ़ पहुँचे और मंत्री के मरने तथा शहर भर में गम छाने का हाल लेकर बीरेन्द्रसिंह के पास लौट आये, यह भी खबर लाये

* बालादवी—टोह लेने के लिये गश्त करना।

कि दो रोज में सूतक निकल जाने पर महाराज जयसिंह क्रूर को अपना दीवान बनावेंगे।

बीरेन्द्रसिंह० । देखो क्रूर ने चन्द्रकान्ता के लिए बाप को मार डाला ! अगर राजा को भी मार डाले तो ऐसे आदमी का क्या ठिकाना है ।

तेजसिंह० । सच है, वह नालायक जहाँ तक होगा राजा पर भी बहुत जल्द हाथ फेरेगा, अस्तु अब मैं भी दो तीन दिन चन्द्रकान्ता के महल में न जाकर दर्बार ही का हालचाल लूँगा, हाँ इस बीच में अगर मौका मिल जायगा तो देखा जायगा ।

बीरेन्द्रसिंह० । सो सब कुछ नहीं, चाहे जो हो आज मैं चन्द्रकान्ता से जरूर मुलाकात करूँगा ।

तेजसिंह० । आप जल्दी न करें, जल्दी ही सब कामों को बिगाड़ती है ।

बीरेन्द्र० । जो भी हो, मैं तो जरूर जाऊँगा !

तेजसिंह ने बहुत समझाया मगर चन्द्रकान्ता की जुदाई में उनको भला बुरा क्या सूझता था, एक न माना और चलने को तैयार ही हो गये । आखिर तेजसिंह ने कहा, "खैर तो चलिए, जब आपकी ऐसी ही मर्जी है तो हम क्या करें, जो कुछ होगा देखा जायगा !"

शाम के वक्त ये दोनों टहलने के लिए खेमे से बाहर निकले और अपने प्यादों से कह गये कि अगर हमलोगों के आने में देर हो तो घबराना मत । टहलते हुए दोनों विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए ।

कुछ रात गई होगी जब चन्द्रकान्ता के उसी नजरबाग के पास पहुँचे जिसका हाल पहिले लिख चुके हैं ।

रात अँधेरी थी इसीलिए इन दोनों को बाग में जाने के लिए कोई तरद्दुद न करना पड़ा, पहरे वालों को बचा कर कमन्द फेंका और उसके जरिये बाग के अन्दर जा दोनों एक घने पेड़ के नीचे खड़े हो इधर उधर निगाह दौड़ा कर देखने लगे ।

बाग के बीचोबीच संगमरमर के साफ़ चिकने चबूतरे पर मोमी शमादान जल रहा था जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी बातें कर रही थीं । चपला बातें भी करती जाती थी और इधर उधर तेजी के साथ निगाह भी दौड़ा रही थी ।

चन्द्रकान्ता को देखते ही बीरेन्द्रसिंह का अजब हाल हो गया बदन में कँपकँपी होने लगी, यहाँ तक कि बेहोश होकर गिर पड़े । मगर बीरेन्द्रसिंह की यह हालत देख तेजसिंह को कोई तरद्दुद न हुआ, झट अपने ऐयारी के बटुए से लखलखा निकाल सुंघा दिया और होश में लाकर कहा, "देखिए, दूसरे के मकान में आपको इस तरह बेसुध न होना चाहिए । अब आप अपने को सम्हालिए और इसी जगह ठहरिए, मैं

जाकर बातें कर आऊँ तब आपको ले चलूँ ।" यह कह उन्हें उसी पेड़ के नीचे छोड़ उस जगह गए जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बैठी थी । तेजसिंह को देखते ही चन्द्रकान्ता बोली, "क्यों जी, इतने दिन कहाँ रहे ? क्या इसी का नाम मुरौवत है ? अबकी भी आए तो अकेले ही आए ! वाह, ऐसा ही था तो हाथ में चूड़ी पहन लेते, जवांमर्दी की डींग क्यों मारते हैं ? जब उनकी मुहब्बत का यही हाल है तो जी कर क्या करूँगी ?" कह कर चन्द्रकान्ता रोने लगी, यहाँ तक कि हिचकी बँध गई । तेजसिंह उसकी यह हालत देख बहुत घबड़ाये और बोले, "बस इसी को नादानी कहते हैं ? अच्छी तरह हाल भी न पूछा और लगीं रोने, ऐसा ही है तो लो मैं अभी उनको ले आता हूँ !"

यह कह कर तेजसिंह वहाँ गए जहाँ बीरेन्द्रसिंह को छोड़ा था और उनको अपने साथ ले चन्द्रकान्ता के पास लौटे । चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह के मिलने से बड़ी खुशी हुई, दोनों मिलकर खूब रोए यहाँ तक कि बेहोश हो गए मगर थोड़ी देर बाद होश में आ गए और आपस में शिकायत मिली मुहब्बत की बातें करने लगे ।

अब जमाने का उलट फेर देखिए । घूमता फिरता टोह लगाता नाजिम भी उसी जगह आ पहुँचा और दूर से इन सभों की खुशी भरी मजलिस देख कर जल मरा । तुरत ही लौट कर क्रूरसिंह के पास पहुँचा । क्रूरसिंह ने नाजिम को घबड़ाया हुआ देखा और पूछा, "क्यों क्या है जो तुम इतना घबड़ाए हुए हो ?"

नाजिम० । है क्या, जो मैं सोचता था वही हुआ ! यही वक्त चालाकी का है, अगर अब भी कुछ बन न पड़ा तो बस तुम्हारी किस्मत फूट गई ऐसा ही समझना पड़ेगा ।

क्रूरसिंह० । तुम्हारी बातें तो कुछ समझ में नहीं आतीं, खुलासा कहो क्या बात है ?

नाजिम० । खुलासा बस यही है कि बीरेन्द्रसिंह चन्द्रकान्ता के पास पहुँच गया और इस समय बाग में हँसी खुशी के चहचहे उड़ रहे हैं ।

यह सुनते ही क्रूरसिंह की आँखों के आगे अँधेरा सा छा गया, दुनिया उदास मालूम होने लगी, कहाँ तो बाप के जाहिरी गम में वह सर मुड़ाए बरसाती मेढ़क बना बैठा था, तेरह रोज कहीं बाहर जाना हो ही नहीं सकता था, मगर इस खबर ने उसको अपने आपे में न रहने दिया, फौरन उठ खड़ा हुआ और उसी तरह नंग धड़ंग औंधी हाँड़ी सा सर लिए महाराज जयसिंह के पास पहुँचा । जयसिंह क्रूरसिंह को इस तरह आते देख हैरान हो बोले, "क्रूरसिंह, सूतक और बाप का गम छोड़ कर

एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे उनके मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक हो रहा है, ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों*को जिनका नाम नाजिमअली और अहमदखां है इस बात की ताकीद कर दी है कि बराबर वे लोग महल की निगहबानी किया करें क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उनके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बंधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कान तक आपकी लगावट का हाल पहुँचा दिया है और इसी सबब से पहरे की यह सख्त तकीद हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहां जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूं।

"इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादा मानती है। सिवाय इस चपला के मेरा साथ देने वाला वहां कोई नहीं है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देख कर लौटूं तब आपके चलने के बारे में राय दूँ। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे बूझे काम करके हमलोग वहां ही गिरफ्तार हो जायं।"

बीरेन्द्र०। जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।

तेजसिंह०। मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद यहां आकर पुनः हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी में आये थे ? अफसोस उस वक्त मैं यहां न था।

बीरेन्द्र०। मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फंसाया चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर अब तुम जाओ और जिस तरह बने चन्द्रकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। बीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल उस पर सवार हुए और अपने किले की तरफ चल चले गये।

* ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य काम है।

दूसरा बयान

विजयगढ़ में क्रूरसिंह* अपनी बैठक के अन्दर नाजिम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बातें कर रहा है।

क्रूर०। देखो नाजिम, महाराज को तो यह ख्याल है कि मैं राजा होकर मन्त्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊँ, और चन्द्रकान्ता बीरेन्द्रसिंह को चाहती है, अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले ? अगर सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊं, तो कहाँ जाऊं और कहाँ रह कर आराम करूं ? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे ? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहले बीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी ऐसी जगह ले जाकर खपा डाला जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे, और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाय फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊंगा और तब अलबत्ते अपनी जिन्दगी में चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूंगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मारने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूंगा ? लोग मुझे राजा कैसे बनाएंगे ?

नाजिम०। हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभों को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें ?

क्रूरसिंह०। अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।

अहमद०। तो बस ठीक है, आप इस बात का एकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें, मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूंगा।

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मजहब अख्तियार करने का एकरारनामा लिख कर फौरन नाजिम और अहमद के हवाले किया, जिस पर अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, "अब सब मुसलमानों को एक दिल कर लेना हम लोगों के जिम्मे है, इसके लिए आप कुछ न सोचिये, हाँ हम दोनों आदमियों के लिए भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिये कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वजीर मुकर्रर किये जायंगे, और तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिये कि बात की बात में जमाना कैसे उलट पुलट कर देते हैं !"

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी एकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाजिम ने कहा, "इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के

* इसकी उम्र २१ या २२ वर्ष की थी और

"चलिए महाराज ने बुलाया है।" क्रूरसिंह घबड़ा उठा कि महाराज ने क्यों बुलाया, क्या चोर नहीं मिला? महाराज तो मेरे सामने महल में चले गए थे! हरीसिंह से पूछा, "महाराज क्या कर रहे हैं?" उसने कहा, "अभी महल में आए हैं गुस्से में भरे बैठे हैं आपको जल्दी बुलाया है।" यह सुनते ही क्रूरसिंह की नानी मर गई, डरता कांपता हरीसिंह के साथ महाराज के पास पहुँचा।

महाराज ने क्रूर को देखते ही कहा, "क्यों बे क्रूर! बेचारी चन्द्रकान्ता को इस तरह झूठ मूठ बदनाम करना और हमारी इज्जत में बट्टा लगाना यही तेरा काम है! यह इतने आदमी जो बाग को घेरे हुए हैं अपने जी में क्या कहते होंगे? नालायक, गदहा, पाजी! तैंने कैसे कहा कि महल में बीरेन्द्र है!!"

मारे गुस्से के महाराज जयसिंह के होठ काँप रहे थे, आँखें लाल हो रही थीं। कैफियत देख कर क्रूरसिंह की तो जान सूख गई, घबड़ा के बोला, "मुझको तो यह नाजिम ने खबर पहुँचाई थी जो आज कल महल के पहरे पर मुकर्रर है।" यह सुनते ही महाराज ने हुक्म दिया, "बुलाओ नाजिम को!" थोड़ी देर में नाजिम भी हाजिर किया गया। गुस्से में भरे हुए महाराज के मुँह से साफ आवाज नहीं निकलती थी। टूटे फूटे शब्दों में नाजिम से पूछा, "क्यों बे, तैंने कैसी खबर पहुँचाई?" उस वक्त डर के मारे उसकी क्या हालत थी वही जानता होगा, जान से नाउम्मीद हो चुका था, डरता हुआ बोला, "मैंने तो आँखों से देखा था हुजूर, शायद किसी तरह भाग गया हो।"

अब जयसिंह से गुस्सा बर्दाश्त न हो सका, हुक्म दिया, "पचास कोड़े क्रूर को और दो सौ कोड़े नाजिम को लगाए जायं! बस इतने ही पर छोड़े देता हूँ, आगे फिर कभी ऐसा होगा तो सिर उतार लिया जायगा! क्रूर, तू वजीर होने लायक नहीं है।"

अब क्या था, लगे दोतर्फी कोड़े पड़ने। उन लोगों के चिल्लाने से महल गूंज उठा मगर महाराज का गुस्सा न गया। जब दोनों पर कोड़े पड़ चुके, उनको महल के बाहर निकलवा दिया और महाराज आराम करने चले गए मगर मारे गुस्से के रात भर नींद न आई।

क्रूरसिंह और नाजिम दोनों घर आए और एक जगह बैठ कर लगे झगड़ने। क्रूर नाजिम से कहने लगा—"तेरी बदौलत आज मेरी इज्जत मिट्टी में मिल गई! कल दीवान होंगे यह यह उम्मीद भी न रही, मार खाई उसकी तकलीफ मैं ही जानता हूँ, यह सब तेरी ही बदौलत हुआ!!" नाजिम कहता था—"मैं तुम्हारी

बदौलत मारा गया, नहीं तो मुझको क्या काम था? जहन्नुम में जाती चन्द्रकान्ता और बीरेन्द्र, मुझे क्या पड़ी थी जो जूते खाता!" ये दोनों आपस में यों ही पहरों झगड़ते रहे।

अन्त में क्रूरसिंह ने कहा, "हम तुम दोनों को लानत है अगर इतनी सजा पाने पर भी बीरेन्द्र को गिरफ्तार न किया!"

नाजिम ने कहा, "इसमें तो कोई शक नहीं कि बीरेन्द्र अब रोज महल में आया करेगा क्योंकि इसी वास्ते वह अपना डेरा सरहद पर ले आया है, मगर अब कोई काम करने का हौसला नहीं पड़ता, कहीं फिर मैं देखूं और खबर करने पर वह दुबारा निकल जाय तो अबकी जरूर ही जान से मारा जाऊंगा।"

क्रूरसिंह ने कहा, "तब तो कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिए जिसमें जान भी बचे और बीरेन्द्रसिंह को अपनी आँखों से महाराज जयसिंह महल में देख भी लें।

बहुत देर सोचने के बाद नाजिम ने कहा, "चुनारगढ़ के महाराज शिवदत्तसिंह के दर्बार में एक पण्डित जगन्नाथ नामी ज्योतिषी हैं जो रमल भी बहुत अच्छा जानते हैं। उनके रमल फेंकने में इतनी तेजी है कि जब चाहो पूछ लो कि फलाना आदमी इस समय कहाँ है क्या कर रहा है या कैसे पकड़ा जायगा? वह फौरन बतला देते हैं। उनको अगर मिलाया जाय और वे यहाँ आकर और कुछ दिन रह कर तुम्हारी मदद करें तो सब काम ठीक हो जाय। चुनारगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है, कुल तेईस कोस है, चलो हम तुम चलें और जिस तरह बन पड़े उन्हें ले आवें।"

आखिर क्रूरसिंह बहुत कुछ जवाहिरात अपने कमर में बाँध दो तेज घोड़े मंगवा नाजिम के साथ सवार हो उसी समय चुनार* की तरफ रवाना हो गया और घर में सबसे कह गया कि अगर महाराज के यहाँ से कोई आवे तो कह देना कि बहुत बीमार हैं।

नौवां बयान

बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह बाग से बाहर हो अपने खेमे की तरफ रवाना हुए। जब खेमे में पहुँचे तो आधी रात बीत चुकी थी मगर तेजसिंह को कब चैन पड़ता था, बीरेन्द्रसिंह को पहुँचा कर फिर लौटे और अहमद की सूरत बन क्रूरसिंह के मकान पर पहुँचे। क्रूरसिंह चुनार की तरफ रवाना हो चुका था, जिस आदमी

* इसका पुराना नाम चर्णाद्रि है।

हालचाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत अच्छा है, चन्द्रकान्ता जरूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी विरह कहानी कहती होगी, इसलिए हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आजकल बीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है।"

यह कह कर दोनों ऐयार क्रूरसिंह से बिदा हुए।

तीसरा बयान

कुछ कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं। भीनी भीनी फूलों की महक धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही है। तरह तरह के फूल खिले हुए हैं। बाग के पश्चिम की तरफ वाले आम के घने पेड़ों की बहार और उसमें से बैठते हुए सूरज के किरणों की चमक एक अजीब ही मजा दे रही है। फूलों की क्यारियों की रविशों में अच्छी तरह छिड़काव किया हुआ है और फूलों के दरख्त भी फच्छी तरह पानी से धोए हुए हैं। कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिए की क्यारियाँ अपना अपना मजा दे रही हैं। एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊँचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर सुन्दर बुर्जियां अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला जो चालाकी के फन में बड़ी तेज और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है अपने चंचल हावभाव के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिए चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़ तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है, मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं, उसे तो दिल बहलाने के लिए उसकी सखियां जबर्दस्ती बाग में खींच लाई हैं।

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा तो गुच्छा बनाने के लिये फूलों को तोड़ती हुई मालती-लता के कुञ्ज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे धीरे टहलती हुई बीच के फौवारे के पास जा निकलीं और उसकी चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला०। न मालूम चम्पा किधर चली गई!

चन्द्रकान्ता०। कहीं इधर उधर घूमती होगी।

चपला०। दो घड़ी से ज्यादे हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।

चन्द्रकान्ता०। देखो वह आ रही है।

चपला०। इस वक्त तो इसकी चाल में फर्क मालूम होता है!

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और

कहा, "देखिये यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ! अगर इस वक्त कुंवर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको बहुत कुछ इनाम देते।"

बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही यकायक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल-मुख मुरझा गया, ऊँची ऊँची सांसें लेने लगी, आँखों से आंसू टपकने लगे। धीरे धीरे कहने लगी, "न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किये हैं जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा। देखो पिता को क्या धुन समाई है। कहते हैं कि चन्द्रकान्ता को कुंआरी ही रक्खूंगा। हाय, बीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिए कैसी कैसी खुशामदें कीं मगर उस दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उनको ऐसा कुछ अपने वश में कर रक्खा है कि कोई काम होने नहीं देता, और उधर कम्बख्त क्रूर मुझसे अपनी ही लसी लगाना चाहता है।"

यकायक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर धीरे से दबाया, मानो चुप रहने के लिए इशारा किया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टहलने लगी, मगर अपना रूमाल उस जगह जान बूझकर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने चम्पा से कहा, "सखी, देखो तो फौवारे के पास कहीं मेरा रूमाल गिर पड़ा है।"

चम्पा रूमाल लेने फौवारे की तरफ चली गई, तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, "सखी तैंने बोलते बोलते मुझे यकायक क्यों रोका?"

चपला ने कहा, "मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शुबहा हो गया है, उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।"

इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, "सखी, कल रात को मैंने तुझसे जो कहा था सो तैंने किया?" चम्पा बोली, "नहीं मैं तो भूल गई!" तब चपला ने कहा, "भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई!" चम्पा बोली, "बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा, "भला दोहरा के मुझसे कह तो सही, तब मैं जानूँ कि तुझे याद है!"

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कह कर कि 'मैं तुझसे एक बात कहूँगी' चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली, "देख तो चम्पा मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती? क्योंकि कल से कान में दर्द है!"

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है)

साधारण संस्करण

मूल्य Price 1/8/-

भूमिका

[प्रथम संस्करण से]

आज हिन्दी के बहुत से उपन्यास हुए हैं जिनमें कई तरह की बातें वो राजनीति भी लिखी गई है, राजदर्बार के तरीके वो सामान भी जाहिर किए गये हैं, मगर राजदर्बारों में ऐयार (चालाक) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफन-मौला याने सूरत बदलना, बहुत सी दवाओं का जानना, गाना बजाना, दौड़ना, शस्त्र चलाना, जासूसों का काम देना, वगैरह बहुत सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून गिराये वो पल-टनों की जानें गँवाये लड़ाई खतम कर देते थे। इन लोगों की बड़ी कदर की जाती थी। इन्हीं ऐयारी पेशे में आज कल बहु-रूपिये दिखाई देते हैं। वे सब गुण तो इन लोगों में रहे नहीं सिर्फ शक्ल बदलना रह गया वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में अभी तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा। अगर हिन्दी पढ़ने वाले इस मजे को देख लें तो कई बातों का फायदा हो! सबसे ज्यादे फायदा तो यह है कि ऐसी किताबों को पढ़ने वाला जल्दी किसी के धोखे में न पड़ेगा। इन सब बातों का खयाल करके मैंने यह 'चन्द्रकान्ता' नामक उपन्यास लिखा। इस किताब में नौगढ़ वो विजयगढ़

को घर में हिफाजत के लिए छोड़ गया था और कह गया था कि अगर महाराज पूछें तो कह देना बीमार हैं उन लोगों ने यकायक अहमद को देखा तो ताज्जुब से पूछा, "कहो अहमद, तुम कहाँ थे अब तक ?" नकली अहमद ने कहा, "मैं जहन्नुम की सैर करने गया था, अब लौट कर आया हूँ—यह बताओ कि क्रूरसिंह कहाँ हैं?" सभों ने उसका पूरा पूरा हाल कह सुनाया और कहा, "अब चुनार गये हैं, तुम भी वहीं जाते तो अच्छा होता !"

अहमद ने कहा, "हाँ मैं भी जाता हूँ, अब घर न जाऊंगा सीधे चुनार ही पहुँचता हूँ।" यह कह वहाँ से रवाना हो अपने खेमे में आये और बीरेन्द्रसिंह से सब हाल कहा। बाकी रात आराम किया, सबेरा होते ही नहा धो, कुछ भोजन कर, सूरत बदल, विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। नंगे सिर, हाथ पैर और मुंह पर धूल डाले, रोते पीटते महाराज जयसिंह के दर्बार में पहुँचे। इनकी हालत देख कर सब हैरान हो गये। महाराज ने मुन्शी से कहा, "पूछो कौन है और क्या कहता है ?"

तेजसिंह ने कहा—"हुजूर मैं क्रूरसिंह का नौकर हूँ, मेरा नाम रामलाल है। महाराज से बागी होकर क्रूरसिंह चुनारगढ़ के राजा के पास चला गया है। मैंने मना किया कि महाराज का नमक खाकर ऐसा न करना चाहिए, जिस पर मुझको खूब मारा और जो कुछ मेरे पास था सब छीन लिया। हाय रे, मैं बिल्कुल लुट गया, एक कौड़ी भी नहीं रही, अब मैं क्या खाऊंगा, घर कैसे पहुँचूंगा, लड़के बाले तीन बरस की कमाई खोजेंगे, कहेंगे कि रजवाड़े की कमाई क्या लाए हो ? उनको क्या दूँगा ! दोहाई महाराज की, दोहाई दोहाई दोहाई !!"

बड़ी मुश्किल से सभों ने चुप कराया। महाराज को बड़ा गुस्सा आया, हुक्म दिया, "देखो क्रूरसिंह कहाँ है ?" चोबदार खबर लाया—"बहुत बीमार हैं, उठ नहीं सकते।" रामलाल (तेजसिंह) बोला, "दोहाई महाराज की ! यह भी उन्हीं की तरफ मिल गया, झूठ बोलता है। मुसलमान सब उसके दोस्त हैं, दोहाई महाराज की, खूब तहकीकात की जाय !" महाराज ने मुन्शी से कहा, "तुम जाकर पता लगाओ कि क्या मामला है ?" थोड़ी देर बाद मुन्शी वापस आये और बोले, "महाराज, क्रूरसिंह घर में तो नहीं है, और घर वाले कुछ बताते नहीं कि कहाँ गये हैं।" महाराज ने कहा, "जरूर चुनारगढ़ गया होगा ! अच्छा उसके यहाँ के किसी प्यादे को बुलाओ।" हुक्म पाते ही चोबदार गया और एक बदकिस्मत प्यादे को पकड़ लाया। महाराज ने पूछा, "क्रूरसिंह कहाँ गया है ?" प्यादे ने ठीक पता नहीं दिया। रामलाल ने फिर कहा, "दोहाई महाराज की। बिना मार खाये न बतायेगा !!" महाराज ने मारने

का हुक्म दिया। पिटने के पहले ही उस बदनसीब ने बतला दिया कि चुनार गए हैं।

महाराज जयसिंह को क्रूर का हाल सुन कर जितना गुस्सा आया बयान से बाहर है। हुक्म दिया—

(१) क्रूरसिंह के घर के सब औरत मर्द घण्टे भर के अन्दर जान बचा के हमारी सरहद के बाहर चले जायं।

(२) उसका मकान लूट लिया जाय।

(३) उसकी दौलत में से जितना रुपया अकेला रामलाल उठा ले जा सके ले जाय, बाकी सरकारी खजाने में दाखिल किया जाय।

(४) रामलाल अगर नौकरी कबूल करे तो दी जाय।

हुक्म पाते ही सबसे पहले रामलाल क्रूरसिंह के घर पहुँचा। महाराज के मुन्शी को जो हुक्म की तामील करने गया था रामलाल ने कहा, "पहिले मुझको रुपए दे दो कि उठा ले जाऊं और महाराज को आशीर्वाद करूं। बस जल्दी दो, मुझ गरीब को मत सताओ !!" मुन्शी ने कहा "अजब आदमी है, इसको अपनी ही पड़ी है ! ठहर जा, जल्दी क्यों करता है !" नकली रामलाल ने चिल्ला कर कहना शुरू किया, "दुहाई महाराज की, मेरे रुपए मुन्शी नहीं देता !" कहता हुआ महाराज की तरफ चला। मुन्शी ने कहा, "लो लो, जाते कहाँ हो, भाई पहिले इसको दे दो !!"

रामलाल ने कहा, "हत्तेरे की, मैं चिल्लाता नहीं तो सभी रुपए डकार जाता !" इस पर सब हंस पड़े। मुन्शी ने दो हजार रुपए आगे रखवा दिए और कहा, "ले ले जा !" रामलाल ने कहा, "वाह, कुछ याद है महाराज ने क्या हुक्म दिया है ? इतना तो मेरे जेब में आ जायगा, मैं उठा के क्या ले जाऊंगा ?" मुन्शी झुंझला उठा, नकली रामलाल को खजाने के सन्दूक के पास ले जा कर खड़ा कर दिया और कहा, "उठा देखें कितना उठाता है !" देखते देखते उसने दस हजार रुपए उठा लिए, सिर पर, बटुए में कमर में, जेब में, यहाँ तक कि मुंह में भी कुछ रुपए भर लिए और रास्ता लिया। सब हंसने और कहने लगे, "आदमी नहीं इसे राक्षस समझना चाहिए !"

महाराज के हुक्म की तामील हो गई, घर लूट लिया गया, औरत मर्द सभों ने रोते पीटते चुनार का रास्ता पकड़ा।

तेजसिंह रुपया लिए हुए बीरेन्द्रसिंह के पास पहुँचे और बोले, "आज तो मुनाफा कर लाए, मगर यार माल शैतान का है, इसमें कुछ आप भी मिला दीजिए जिसमें पाक हो जाय !" बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "यह तो बताओ कि लाए कहाँ से ?" उन्होंने

से ही अहमद और नाजिम को अपना काम करने का मौका मिल गया था।

चौथा बयान

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुँचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरेवाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे। आखिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए ? रात चाँदनी है, अगर अन्धेरी होती तो कमन्द लगाकर ही महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की सी बना महल की ड्योढ़ी पर पहुँचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, "यार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराजने हमको अपनी अर्दली में नौकर रक्खा है, इस वक्त छुट्टी थी, चाँदनी रात का मजा देखते टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूँक हम भी लगा लें, अफियून खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है आप लोग भी जानते ही होंगे !"

"हाँ हाँ, आइये बैठिये, तम्बाकू पीजिए !" कहकर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता हाँ हाथ से जरूर पी लूँगा।" यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

दो फूँक भी तम्बाकू के नहीं पीए थे कि खांसना शुरू किया, इतना खांसा कि थोड़ा सा पानी भी मुँह से निकाल दिया और तब कहा, "मियां, तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो ? मैं तो हमेशे सरकारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गयी है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा ही नहीं लगता !"

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "लो तुम लोग भी पी कर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा, पीना क्या सपने में भी न देखा होगा ? झट से हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई, भला तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू तो पी लें, तुम बड़े किस्मतवर हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे !" यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमाकर तेजसिंह

के सामने लाये। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग सुलगाओ, फिर मैं भी ले लूँगा।"

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गए और नजर बाग में पहुँचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूँ तक न कर सकी और जमीन पर गिर पड़ी। तुरत उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब वह बेहोश हो गई उसे वहाँ से उठा कर किनारे ले गये। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आईना रख अपनी सूरत उसी के जैसी बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी का कपड़ा पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुँचे जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा दस पाँच लौंडियों के साथ बैठी बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बने हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, "क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ रही है ?"

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि जिस लौंडी को मैंने बेहोश किया है या जिसकी सूरत बन कर आया हूँ उसका नाम केतकी है।

नकली केतकी०। हाँ काम करने तो गई ही थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिये लौट आई हूँ।

चपला०। ऐसा ! अच्छा तैंने क्या देखा कह ?

नकली के०। सभों को हटा दो तो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊँ।

सब लौंडियां हटा दी गईं और केवल चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा रह गईं, तब केतकी ने हँस कर कहा, "कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊँ।"

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद यह कुछ बीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर फिर यह भी सोचा कि मैंने तो आज तक कभी बीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया तब यह क्या मामला है ? कौन सी खुशखबरी है जिसके सुनने के लिए यह पहिले ही से इनाम मांगती है ? आखिर चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, "हां हां इनाम दूँगी, तू कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है ?"